रविवार, दिनाँक 28-05-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जीतेंगे, जीतेंगे, हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

हनुमान जी दे वचनां ते चल-चलकर

हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

जीतेंगे, जीतेंगे, हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

सजनों अभी जो संकल्प आप ने लिया वह बहुत अच्छा है लेकिन इस पर दृढ़तापूर्वक बने रहना आवश्यक है। यहाँ याद रखो कि जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर मनमत लगाए बगैर चलना सुनिश्चित करता है, वह अवश्यमेव अपने जीवन की बाज़ी जीत लेता है जो कि अपने आप में एक आज्ञाकारी सुपुत्र बनने जैसी मंगलकारी बात होती है। इस तथ्य के दृष्टिगत हम सबके लिए बनता है कि हम सत्यता से अपना आत्म-निरीक्षण करें कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करने के प्रति कितने समर्पित व सतर्क हैं ? अगर हमारी कथनी और करनी एक है तब तो यह बोलना हमें शोभा देता है अन्यथा यह बहुत बड़ा धोखा है यानि केवल अपने साथ ही नहीं अपितु सबके साथ अन्याय करने की बात है। याद रखो अन्याय संगत जीवन जीने वाला कदापि अपनी कथनी को करनी के अनुसार और करनी को कथनी के अनुसार नहीं साध सकता। तभी तो ऐसा धोखेबाज व्यक्ति नुक्सानदायक साबित होता है। अतः मानो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर दृढ़-संकल्पता से बने रहने के लिए मनमत को त्यागने की कुर्बानी दिखानी पड़ेगी। हम देखते हैं कि बड़े-बड़े पढ़े लिखे व अच्छे-अच्छे पद पर आसीन इन्सान मनमत पर चलते हैं और अहंकारी कहलाते हैं, ऐसा क्यों? - क्योंकि उनकी करनी सर्वहित के दृष्टिगत नहीं होती बल्कि केवल अपने हित को ध्यान में रख कर की जाती है। ऐसे सजन सेवा, नौकरी और नौकर में फर्क नहीं समझते। इसीलिए तो नौकरी में उनको जो प्राप्त होता है उसके बदले में वे सब कुछ सह जाते हैं परन्तु सेवा के दौरान वे ऐसा करने में असक्षम होते हैं और अत्यन्त नुक्सानदायक साबित होते हैं। ऐसा न हो इस हेतु सजनों निष्काम सेवा में बने रहो और इसके लिए जो भी निर्धारित नीति-नियम हैं उन पर सुदृढ़ता

से बने रहो अन्यथा मान लेना इसकी विपरीतता सेवा नहीं कहलायेगी क्योंकि वह नुक्सानदायक साबित होगी। सो मान लेना है कि ऐसी सेवा जो स्वार्थ-सिद्धि के निमित्त की जाती है वह केवल और केवल दिखावा है। अतः खुद को समझना है और समझाना है कि कामनायुक्त सेवा कभी भी सेवा नहीं कहलाती। अन्य शब्दों में जिसकी कथनी और करनी में अन्तर हो, वह इन्सान खुद को तो धोखा देता ही है साथ ही वह धोखेबाज कभी भी समाज के उत्थान के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं हो सकता। ऐसा इसलिए क्योंकि उसको स्वार्थ खींच लेता है और वह स्वार्थ के आगे हार जाता है। यह हार किसी को प्राप्त न हो उसके लिए अब ध्यान से सुनो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या कह रहा हैः-

दिखा देसन महाबीर दिखा देसन, सारी दुनियां दा मन हिला देसन।।

घोड़े ते सवार होके गली गली ओ फिर रहे ने, जेहड़े भाई मनणकार न होसन।

उन्हां नूं बली समझा देसन, दिखा देसन महाबीर दिखा देसन।।

पाप पुण्य जो करे सब दा बली जी देख रहे।

जेहड़ी भैण मनणकार न होसी, उसनूं गदा दा बल दिखा देसन।।

हुण भाईयो तुसी मन जावो, नहीं तां अपना आप दिखा देसन।

खबरदार हो जाओ मेरे भाईयो, बली आप तुहानुं समझा देसन।।

मन लवो मेरे भाईयो, उपदेश बली कोलों लै जाओ।

राम लक्ष्मण सीता प्यारी नूं बली जी आप मिला देसन।।

जिन्हां नाम लिया होया है, बली युक्ती आप बता देसन।

जेहड़े भाई नूं चाह है रघुनाथ जी दी, बली जी आप मिला देसन।

सुत्ते हो तां हुण जागो भाईयो, बली रघुनाथ जी दे चरणां विच बहला देसन।

तीनों ताप देख के बली दुनियां दे विच आ गये।

दुखड़े सब दे दूर होसन, त्रिलोकी नूं बली जी हर्षा देसन।।

गाफ़ल सुत्तियां भाईयां नूं, बली जी आप जगा देसन।

रघुवीर महाबीर जी फिर रहे ने, हुण इको रूप दिखा देसन।

वक्त है हुण सम्भल जावो, अखीरी वक्त हुण आ गया।

शरण आवो महाबीर जी दी, ओ दीन पर दयाल होसन।।

दासी हुण ए पुकार रही शरणीं आवो महाबीर जी दी।

जेहड़े भाई बिगड़े होए ने, उन्हां नूं बली समझा देसन।।

सजनों कलियुगी स्वभावों वाले इन्सानों के ख़्यालों की उलझन को दृष्टिगत रखते हुए सच्चेपातशाह जी आत्म-विस्मृत इन्सानों को पुनः आत्म-स्मृति में लाने हेतु चेतावनी देते हुए कहते हैं कि हे इन्सानों ! समय अनुकूल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग कर लो क्योंकि वह अब कलियुग को मिटाने के लिए व कुल सृष्टि के उद्धार के निमित्त इस दुनियाँ में आ गये हैं। अब ऐसा स्वीकारना या न स्वीकारना हर इन्सान का व्यक्तिगत निश्चय है। कहने का आशय यह है कि आत्म-सुधार हेतु जो विचार सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हम सबको प्रदान कर रहा है, हम उन विचारों को धारणकर स्वाभाविक उन्नति दर्शायें और आत्मीयता अनुरूप ढल जाएँ। यहाँ याद रखो कि जो अपना सजन होता है केवल वही इन्सान ऐसा करने को सबसे अधिक प्राथमिकता देता है और कुछ भी करने के लिए तत्पर हो जाता है। इसके विपरीत जो अपना ही सजन नहीं यानि जिसे अपने जीवन का मकसद ही नहीं पता, वह मूर्ख लाख समझाने पर भी होश में नहीं आता और बेहोशी भरा मद-मस्त जीवन जीता है। ऐसे गाफिल इन्सान की हालत अत्यन्त दयनीय होती है क्योंकि जिस नशे का वह आदी हो गया होता है, वह अपने आप में बहुत खतरनाक होता है। इस मद-मस्ती से मुक्ति दिलाने हेतु ही सजनों सत्संग में आने का और अपने यथार्थ को जानने का विधि-विधान है। सत्संग में आना और सत्संग को सुनना लेकिन उस पर अमल न करना, यह अपने आप से ही धोखा/फ़रेब है जिसका सीधा सा अर्थ है - स्वाभाविक रूप से कुछ होना और दिखाना कुछ।

इस सन्दर्भ में हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि अपने साथ ऐसा मत करो क्योंकि अपने साथ ऐसा करके आप उनका भी नुक्सान करने वाले हो जिनके साथ जुड़े हुए हो। आशय यह है कि जब आप ही सत्य-धर्म का रास्ता नहीं अपना रहे तो अन्यों को वह रास्ता दिखाने में असक्षम रहोगे ही रहोगे। आपकी सत्य-धर्म से दूरी उनके अन्दर दूरी पैदा करेगी और आप ईश्वर की सृष्टि का नुक्सान करने का कारण बनोगे। इस तरह शास्त्र-विहित चलन से विपरीत उससे हटाकर आप उन्हें बदचलन बना दोगे। अब आप भी ऐसे में क्या कर सकते हो क्योंकि आज संसार में व्यवस्था ही ऐसी है। उस व्यवस्था के दुष्प्रभाव से यह सब खेल चल रहा है। अब आवश्यकता है कि कुल संसार में कुछ ऐसी व्यवस्था स्थापित हो जिसके अन्तर्गत अध्यात्म का सम ज्ञान सबको प्राप्त हो ताकि कोई भी अज्ञानमय अवस्था में न रहे। जब ऐसा हो गया तो तीनों ताप आपको नहीं सता सकेंगे क्योंकि आप ब्रह्माण्डीय कुल रचना को जान जाओगे और समझ जाओगे कि क्योंकर भौतिक व्यवस्था कायम की गई? इस सृष्टि में सबका क्या-क्या कार्यक्षेत्र है? जब तक सजनों यह नहीं जानते तब तक तीनों ताप तो सतायेंगे ही सतायेंगे। यह अज्ञान फिर आपको दूसरों पर निर्भर कर देगा। फिर कुछ इधर से पूछोगे, कुछ उधर से। यह अपने आप में दुर्दशा को प्राप्त होने की बात होगी और आप विवेकशक्ति होते हुए भी यह ग़ुनाह कर बैठोगे। इस सन्दर्भ में मानो कि हमारे पास शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग करके हम सत्य धारण करने में खुद ही योग्य बन सकते हैं। माना भय/मोह/लोभ हमें ऐसा करने से रोकता है पर हमें सावधान रहना है यानि उस विवेकशक्ति का लापरवाही वश प्रयोग नहीं करना अन्यथा जो ईश्वर की आज्ञा पालन का कर्त्तव्य लेकर हम इस कारण-जगत में आये हैं, हम उससे विमुख होकर आत्म-विस्मृत हो जाएँगे। जैसा कि शास्त्र में कहा भी गया हैः-

नकली दुनियां ते आये के सजनों केहड़ा कर्म कमाया

क्या करने आये क्या कर रहे, ओ आल्हा जन्म गवाया

इस तरह सजनों न फिर सुध रहती है, न बुध यानि हमारी सुरत/ख़्याल बद्ध हो जाता है। इसी खोयी हुई सुध-बुध को पुनः जागृति में लाने के लिए सत्संग द्वारा आपको बार-बार सम्भलने का आवाहन दिया जाता है। सो समय को देखते हुए आपके लिए बनता है कि आप हमारे लिए नहीं बल्कि अपने लिए इस आवाहन को सुनकर सम्भल जाओ अन्यथा इस संसार से खाली हाथ जाना पड़ेगा। अधिकतर लोग तो इस दुनियाँ से अपने साथ कर्मों का

बोझ लेकर जाते हैं क्योंकि मनमत जीवन भर उनके सिर पर हावी रहती है। अब जब तक मन नहीं मिटता, तब तक जीवन आनन्दमय नहीं बनता क्योंकि मन जगत के साथ जल्दी जुड़ जाता है। सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होते हुए हमने अपने साथ ऐसा नहीं होने देना। हमें तो शास्त्र-विहित ब्रह्म विचार धारण करने हैं और अपने मन पर पहरा देते रहना है ताकि उसको अशान्त होने का मौका ही न मिले और वह शान्त रहे। इसी महत्ता के दृष्टिगत शास्त्र-विहित विचार धारणकर प्रयोगात्मक ढँग से इस्तेमाल करने का विधान है। याद रखो यदि मन को यह ख़ुराक नियमित रूप से नहीं मिलती तो मन अशान्त हो जाता है। ऐसा होने पर वह कहता है कि जगत ही ठीक है यानि उसमें 'मैं' का भाव उत्पन्न हो जाता है। अक्सर हम ऐसे लोग देखते हैं जो बाहर से लगते कुछ हैं पर पता ही नहीं चलता कि किस चतुराई से वह अपने आप को छुपा जाते हैं। यह कलियुग का प्रभाव है जो अच्छा नहीं लगता क्योंकि ऐसा करने से नई-नई बातें उभरकर आती हैं जिसमें सेवारत अन्य इन्सान भी उलझकर रह जाते हैं। यह अत्यन्त ख़तरनाक खेल होता है जो कि बर्दाश्त से बाहर होता है। इसीलिए सजनों कह रहे हैं किः-

सम्भलो, सम्भलो, सम्भलो अब सम्भल ही जाओ

इस तरह अपने अन्तर्मन व गृहस्थ आश्रम को सतयुग बनाओ। इस सन्दर्भ में यदि किसी को सुख नहीं दे सकते तो कम से कम अपना तो हित करके दिखाओ ताकि अन्यों को उत्साह मिले। जानो यह अपने आप में अनदेखा परोपकार है यानि खुद सुधरना व अन्यों को सुधारना। इस उपकार में प्रवृत्त हो जाओ व इस सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

तूं आप सजना ओ, त्रिलोकी दा सिंगारिया।

मिथ्या घर विसारिया, अपना आप संवारिया।।

त्रिलोकी दा सिंगारिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।

तूं आप सजना ओ, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

सुखां दा है दाता तूं, सुखां दी है पदवी।

सुखां दा साज बना लिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

सिंघासन तेरा तूं, सिंघासन दा मालिक।

कई सूरजां दा सूरज चढ़ा लिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

जगमग जगमग, त्रिलोकी दा तू चानणा।

चिराग़ तेरा ही नज़र आ रिहा, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

विश्व तेरी तूं सारी विश्व दा मालिक।

अचरज ठाठ रचा लिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

सजनों इस कीर्तन के अन्तर्गत परमेश्वर ने हर इन्सान को कहा है कि आप सत्यता के प्रतीक हो, त्रिलोकी का श्रृँगार व शोभा हो। ऐसे में यदि आप ही बिगड़ गये तो कुल ब्रह्माण्ड की शोभा खराब हो जाएगी जो अपने आप में अलग-थलग पड़ अध्यात्म से स्वार्थपरता की ओर बढ़ने की दुःखदायी बात होगी। ऐसा होने पर आप खुद को भूल जाओगे और जगत की हर वस्तु को जानने के पीछे भागते-भागते अन्त में न तो जगत को पूर्णतया जान पाओगे और न ही खुद को जान पाओगे। इस तरह अपना जीवन वृथा गँवा बैठोगे। फिर अन्त समय जब आयेगा तो पछोताओगे। सजनों हमें इस तरह न पछताना पड़े इसके लिए हमें विचार करना है कि जिस परमात्मा ने किसी मकसद के लिए हम जीवों को मानव रूप शरीर दिया, हम उसे पाने का प्रयास करते हैं या नहीं करते। यहाँ बनता तो यह है कि हम अपने वास्तविक कुदरत प्रदत्त धर्म को जाने व पहचाने और उसके प्रति दृढ़-संकल्प होकर आगे बढ़ें। जानो इससे विपरीत चलना आत्म-विस्मृति में आने की बात है यानि जो मैं करने आया था या जो करने के लिए मुझे परम पिता परमात्मा ने जीव रूप में भेजा, मैंने उसी आधार स्वरूप परमात्मा की बात न मानने की ठान ली। इससे बड़ी 'मै' सजनों क्या हो सकती है। यही कारण है कि मैं अहंकारवश उड़ता रहा, उड़ता रहा पर आखिर में उड़कर कहाँ जाऊँगा? - सीधा नीचे पटक कर गिरूँगा और ख़ाक नाल ख़ाक हो जाऊँगा। जैसा कि कहा भी गया हैः-

ख़ाक जमयो ख़ाक कुटम्ब कबीला, ख़ाक है पख परिवार

ख़ाक नाल प्रीत करें तूं, सब जग चलनहार

आशय यह है कि अपने शरीरों से, परिवारों के शरीरों से जुड़कर मैं ख़ाक ही हो गया क्योंकि इस संसार में जीवन भर जो मैंने कर्म, कुकर्म, अधर्म व सुकर्म किये, अन्त समय

मेरा सूक्ष्म शरीर उन कर्मों के बोझ को जीवात्मा के साथ संलग्न कर ले उड़ा। कहने का आशय यह है कि कुदरत के नियम अनुसार जो भी कर्मानुसार हमें प्राप्त होता है व इस हेतु जो व्यवस्था हमारे अन्दर कायम है, उसका हमें कोई ज्ञान ही नहीं है। यदि हम सतर्क रहें और शास्त्र-विहित कर्म करें तो हम इस भोग से बच सकते हैं। लेकिन हम ऐसा नहीं करते और इसके स्थान पर अपने स्थूल शरीर को सजाने-सँवारने में ही लगे रहते हैं। अन्तःकरण क्या है, उस शीशे को कैसे साफ करना है ताकि हम खुद को जान-पहचान सकें? - इसका तो किसी को बोध ही नहीं है। यही कारण है कि हम स्वाभाविक रूप से व वैचारिक रूप से इतना अधिक वास्तविकता से गिर चुके हैं कि अब हमें अपनी होश ही नहीं है। अपने अन्तःकरण रूपी दर्पण को साफ करने की प्रक्रिया न किसी ने हमें बताई, न ही किसी को आती है और न ही वह सब करना हम पसन्द करते हैं क्योंकि हम आदतवश मज़बूर हो गये हैं। यही आदतें व यही मज़बूरियाँ परेशानियाँ पैदा करती हैं। इसीलिए सजनों कहा गया हैः-

मिथ्या घर विसारिया, अपना आप संवारिया

सजनों अपने आप को भूलना वास्तविकता से दूर जाने की और अपना नुक्सान आप करने की बात है। इस नुक्सान का दोष आप किसी पर नहीं लगा सकते। आगे आने वाले युवा बच्चों के साथ ऐसा न हो, इस हेतु हम दिनाँक पन्द्रह जून से अठारह जून तक बच्चों का एक शिविर लगा रहे हैं ताकि कम से कम वे तो अपनी यथार्थ अवस्था में आ जायें और अपना जीवन आबाद कर लें। आशय यह है कि वे ऐसी भूल अपने जीवन में न कर बैठें। इसीलिए उन्हें यहाँ बुलाया है ताकि वे कुदरत प्रदत्त अपने ओज व तेज को समझें और उसी के दम पर निषंग होकर विवेकशीलता से इस जगत में विचरें। अन्य शब्दों में वे सत्य ही सोचें, सत्य ही बोलें और सत्य अनुरूप ही कर्म करें। फिर सतवादी बनकर एकता, एक-अवस्था में आ सतयुगी इन्सान बनें, इसका तरीका उन्हें समझाना है। आप चाहो तो आप भी आ सकते हो। अब आगे सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।

एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।।

जन्म दी बाजी जित चाहे हार, फिर जीत हार है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

कुदरत ने तैनुं इन्सान बनाया, इस जगत ते तां तूं आया उस ईश्वर दी है करामत।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

माता सजन जी दे गर्भ विच आया, उस ईश्वर ने तेरा अंग अंग सजाया।

सूरज चांद दा डिट्ठा प्रकाश, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै।

उस ईश्वर दा सिमरन करके, एहो धन दौलत चलेगा साथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

खबरदार अकल ते राहवीं, बुरा संग कर अकल अपनी न गवावीं।

अकल न कर बरबाद, अकल कर लै तू आज़ाद।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकल है सारा जगजीत मीतां दी ओ है ओ मीत अकल अपनी टिकाणे ला।

फिर तूं उस ईश्वर नूं पा, फिर जीत जीत है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकलवान ते ईश्वर रैहंदे प्रसन्न, अकल इन्सान नूं करदी है दंग।

अकल वेदों में है विदित, अकल वेदों में है अस्थित।

अकल है तुम्हारे पास, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

शब्दः-

सजनों जे दुनियां वल्लों मुख मोड़ लिया, फिर दुनियां वल मुख करना क्यों।

ऐह दुनियां है जे मुसाफिरख़ाना इस दुनियां वल फिर मुख फेरना क्यों।।

(श्री साजन जी दे मुख दी शाख)

(सुनो मेरे सजनों ईश्वर तुहानुं की कैहंदे हिन)

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।

अपनी अक्ल दे नाल कुल दुनियां नूं जगाओ, कुल दुनियां नूं जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दे नाल, दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दा है प्रकाश, परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

सजनों आप सब समझदार हो और ऐसा आप खुद को समझते भी होंगे। आगे जानो कि घर-परिवार में, ऑफिस में जहाँ काम के बदले पैसा मिलता है और सत्संग में जहाँ निष्काम सेवा चलती है, हर जगह विचरने के नीति-नियम भिन्न होते हैं। सत्संग में निष्काम व शुद्ध भाव से विचरना होता है। ऑफिस की नीतियों को हम निष्काम सेवा पर लागू नहीं कर सकते। घर की नीति को सेवा पर लागू नहीं कर सकते। तो अगर हम सब इसके विपरीत आचरण में अटक जाते हैं तो हम भटक जाते हैं जिसका सीधा सा अर्थ होता है कि हमारी अक्ल टिकाणे नहीं है। इसीलिए यह सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हर मानव को अक्ल टिकाणे लाने का सन्देश दे रहा है ताकि इसके द्वारा आप हर तरफ सन्तुलन कायम रखते हुए हर एक के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने में सक्षम बने रह सको। जानो इस संस्था का सेवक होने के नाते आपको नादान नहीं बनना अपितु समझदार बनना है। इस हेतु अपने

विचारों को गूढ़ व ऊँचा उठाना है ताकि आपका उदर विशाल हो और आप हर अवस्था में सम बने रह सको। इस कीर्तन को आपने घर जाकर समझदारी से पढ़ना है और फिर अपनी अक्ल टिकाणे ला कुदरत प्रदत्त धर्म पर डटे रहने हेतु अपना तन-मन-धन निछावर करने के लिए तत्पर हो जाना है।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।